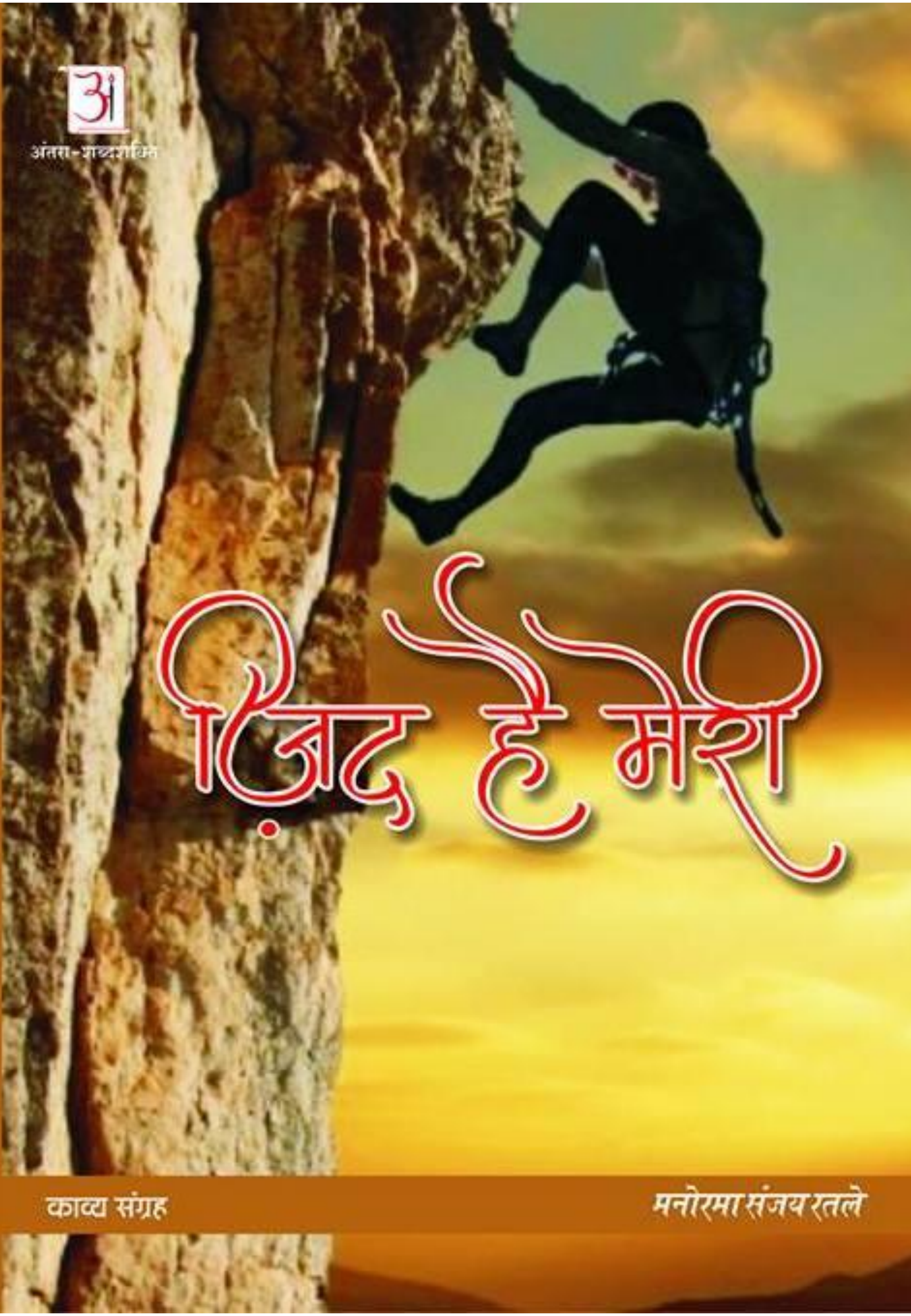
अंतरा-शब्दशक्ति
ज़िद है मेरी
काव्य संग्रह
मनोरमा संजय रतले

जिद है मेरी
(काव्य संग्रह)

मनोरमा रतले

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-95-7

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- मनोरमा रतले

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Zid hai meri by Manorama Ratle

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

श्रीमती मनोरमा रतले की सद्यःरचित कृति ज़िद है मेरी उनकी प्रारंभिक कविताओं का संग्रह है। कवियत्री अपने अस्फुट शब्दों में यथा अनुभूत यथा दृष्ट प्रसंगों को इस पुस्तक में व्यक्त कर रही है। अपने आसपास की भूमि पर उगी चाही-अनचाही वनस्पति को वह देखती है शुभंकर शस्य को चुनती एवं अशुभ को दूर करने का यत्न करती है भावों की तरलता एवं विचारों का मंथर प्रवाह उसे निश्चित लक्ष्य तक पहुंचाता है उसके कथ्य का संसार व्यापक है जिसे क्रमशः स्पर्श करने का प्रयास करती है।

मनोरमा जी कविता को एक हथियार की तरह इस्तेमाल करती हैं कविता केवल मनो विनोद या प्रकृति विहार के लिए नहीं है इसलिए उसकी ज़िद है वह बेचारी बनकर नहीं रहना चाहती, ना दूसरों के आगे गिड़गिड़ाते रहना चाहती, वह पथ दर्शिका बनने लोक का तिमिर हटाने के लिए दृढ़ संकल्पित है,.. ।

दुनिया में किसी के आगे
अब नहीं शीश झुकाऊँगी।
जग में ज्योति बनकर
अँधियारा समाज का मिटाऊँगी।

समाज में बिखरते रिश्ते के लिए कवियत्री चिंतातुर है वह परिवारिक संबंधों को गाढ़ा बनाती और सभी घटकों को प्रेम परोसती है इसलिए वह सात जन्मों के नातों को छोड़ लिव इन रिलेशनशिप की स्थिति पर प्रश्न आकुल है ,.. ।

वह माँ सास बुआ और दीदी सभी की महत्ता को प्रतिपादित करती है वह बेटी के जन्म की पुरस्कर्ता भी है बेटी के जन्म से सिर तो झुकता है पर फलदायक वृक्ष ही तो विनम्र पिता बन सकता है गंगा जैसी पावन विनम्र

बेटियाँ जनकर ही पिता उच्च हिमालय बन जाता है देश प्रेम राष्ट्रीयता और बलिदान जैसे विषय भी इस कृति में उभर कर आए हैं शहीदों के ऊपर कवियत्री समग्र न्योछावर कर देना चाहती है उसकी दृष्टि में कोई शहीद वीर अकेले ही शहीद नहीं होता बल्कि उसका समूचा परिवार शहीद होता है शहीद का विसर्जन परिवार के विसर्जन में समा जाता है।

श्रीमती मनोरमा रतले ने इस संग्रह में अन्यान्य विषय भी संजोए हैं बचपन, वृद्ध आश्रम हिंदी दिवस, कड़वा सच, रीति-रिवाज, बातों के बताशे जैसे विषयों पर उनकी तीक्ष्ण नजर है जिससे भावों और विचारों की तूलिका से संरक्षित किया है कवियत्री की भाषा सहज और सरल है जो प्राथमिक रचनाकार की पहचान भी है संप्रेषणिता का प्रथम गुण भी है भाषा में भावाव्यक्ति का स्वाभाविक गुण है जो उसके पुरश्चरण के लिए वरेण्य है विश्वास है कि श्रीमती मनोरमा अपनी आगामी कृति में अधिक सशक्त होकर वृहत्तर फलक को स्पर्श करेगी उसे अनेकों शुभकामनाएँ।

श्री नाथूराम राठौर

अनुक्रमणिका

1.	ज़िद है मेरी	7
2.	आरजू	8
3.	सच ! तुम भी मेरे होते	9
4.	कड़वा सच	10
5.	इंतजार	11
6.	देर	12
7.	आज़ादी	13
8.	अनुपम वरदान	14
9.	बदलाव	15
10.	विकार	16
11.	किनारा	17
12.	अफसोस है	18
13.	बेघर की बारात	19
14.	देश प्रेम	20
15.	अबला नहीं मैं आग हूँ	21
16.	चिंता	22
17.	अबला नहीं है नारी	23
18.	बेरुखी	24
19.	राम चले आएँगे	25

20. बचपन 26

21. नशा 27

22. सखी 28

23. अंकुरण 29

24. माँ तुझे प्रणाम 30

25. बेटी 31

26. माँ 32

ज़िद है मेरी

आसमान में एक दिन उड़कर मैं दिखलाऊँगी,
आसमान के तारे छूके जग में नाम फिर कमाऊँगी।

मेरे जन्म पर जिन- जिन ने आँसू बहुत बहाए थे,
मेरी माँ को तरह -तरह के उलाहने खूब सुनाऐ थे।

आज उन सबों का मैं मुँह जरूर बँद करवाऊँगी,
अपने कार्यों से मैं उनको इतना तो समझाऊँगी।

सुनो ग़ौर से दुनिया वालों, बनो तुम नारी के आभारी,
बहुत बन चुकी मैं बेचारी,अब मैं ये सब नहीं सुन पाऊँगी।

दुनिया में किसी के आगे अब नहीं शीश झुकाऊँगी,
जग में ज्योति बनके अँधियारा समाज का मिटाऊँगी।

बेटा बेटी एक समान ये तो प्रभु के हैं उपहार,
भाग्य लक्ष्मी रूपा चंडी भी नारी का ही है अवतार।

आरज़ू

खड़े हैं वो दूर हमसे
और दूर हैं हम उनसे,
मगर ये फासला ज़मीं का है
दिलों का नहीं,
निगाह से निगाह मिली है तो
सजा दिल ने पाई है,
करे कोई ख़ता
सज़ा किसी ने पाई है,
गैरों से हमने सुन रखा था
कुछ इस तरह,
प्यार करके आदमी कुछ काम का नहीं रहता,
जाना है राज़े प्यार का
आज सब कुछ गँवा करके।
ऐसे मेरे खामोश आशिक,
ये किस गुनाह की सजा दे रहे हो,
कि ख्वाब में तो मिलते हो,
रूबरू ।
तेरे ही इश्क़ में ये दिल
दीवाना बना गया है,
ना मिले गर तो
आरज़ू ही रह जाएगी,
तेरे कदमों में सजदा करने की,
ऐ मेरे साँवरे...अब तो आ जा।

सच ! तुम भी मेरे होते

नदी के किनारों की तरह ही,
मैंने तुम्हें साथ पाया ।
कहने को साथ थे,
फिर भी अकेला पाया ।
दूर देखने में धरा को,
गगन से मिलते पाया ।
ऐसे ही दूर से मिलते,
मैंने तुमको पाया ।
ऊँचे ऊँचे शिखरों को,
आकाश को चूमते पाया।
पर वो सच न था,
जिसे संसार देख पाया,
पतझड़ के पत्तों की तरह,
कभी इधर कभी उधर ।
मैने स्वयं को गिरते पाया।
कोई मसीहा न मुझे उठाने आया ।
सूरज की किरणों में देखी तेरी छाया,
छाया को जब छूना चाहा तो,
रही वो सिर्फ तेरी छाया ।
क्योकिं छाया, छाया होती है।

कड़वा सच

बहुत लड़ चुके हम गैरों से,
अब अपनो की बारी है,
दूजों को तो हम..
सब कह सकते...
पर अपनों से हमने जंग हारी है....
सच कह रही हूँ सखी घूँट कड़वा है ....
मगर सत्य है...
हमने ...
अपनों को ही छला है
रूप बदल के..
कभी ननद, कभी भाभी..
कभी बहू,कभी सास.....
और ना जाने क्या क्या बनकर,
बताओ तो भला...
है किसी में है इतना सामर्थ्य जो..
नारी को ठग ले.....
बिना नारी के असंभव,
करे हम अपने गुणो का विकास,
अवगुणों का करें विनाश,
तभी ये सपना साकार होगा,
जब हर हाथ होगा नारी का,
तब जाके सामाज का विकास होगा,
नारी बनेगी नारी की शक्ति।

इंतजार

बरसों बाद आज
मुझे फिर इंतजार है,
उस अल्लड़ सी बेझिझक बातूनी सी लड़की का ...
जो किसी से ना डरती थी,
अपने हक की लड़ाई आप लड़ती थी,
किसी को परेशान देख नहीं सकती थी,
बस बिना कुछ सोचे ...
मदद को निकल पड़ती थी,
आज वह ससुराल में जाने क्या बन गई,,,
जीती जागती मेरी बेटी...
जिंदा लाश बन गई।
इतना सताते थे वह दरिंदे,
उसकी अपनी ही बेटी के
मन में जहर घोल दिया,
और कहते अब घुट घुट
जियो या मरो ..इससे हमें क्या ...
आज कैसे भी,
उस कैद खाने से,
मैं बेटी को आजाद कर लाई हूँ,
लेकिन उसकी बेटी ...
ना उनसे ले पाई हूँ,
आज वह सिर्फ ज़िंदा है ...
और मुझे इंतज़ार है....
मेरी उसी खोई हुई बेटी का।

देर

बेटा तुमने आने में
बहुत देर कर दी, माँ अब नहीं रही,
क्या कह रही हो चाची जी ...
नहीं नहीं.. ऐसा कभी नहीं हो सकता मेरी माँ ...
मुझे छोड़ कर..
यूँ नहीं जा सकती ...माँ..
तुम तो मुझसे मिलना चाहती थी,
देखो मैं आ गया हूँ ...
मेरी गलती की
इतनी बड़ी सजा मत दो मुझे माँ,
विदेश की चकाचौंध ने,
मुझे स्वार्थी बना दिया था,
तेरी बातों का,
मुझ पर कोई असर ना होता था,
आज जब,
सब कुछ उजड़ गया,
तब समझ आया,
उठ जा माँ देख,
तेरे संस्कार मुझे यहा खींच ही लाए,
लेकिन इन्हें समझने में
मैंने बहुत देर कर दी ..
उफ्..देर,,, बहुत देर कर दी।

आजादी

मिली ना थी हमें आजादी यूँ ही खैरात में ...
इसके बदले देनी पड़ी थी अनेकों कुर्बानी,
कितनी ही माँओं ने अपने लाल खोए थे,
तो कितनी ही बहनों ने अपने भाई खोए थे,
ऐसे अनगिनत रिश्तों को सब ने खोया था,
हमारी माँ बहनों ने जाने क्या-क्या सहा था,
कैसे भूल जाऊँ इनके जुल्मों सितम को,
पग-पग उन्होंने कैसे वीरों को कुचला था,
जैसे हो ना वो मानव कोई वह मोम का पुतला,
भूल कैसे पाएंगे, वो जलियांवाला बाग,
जहाँ पर कितने ही निरपराध को मारा था,
उनके अत्याचारों का ऐसे ही नहीं हुआ अंत,
लोहे के चने चबा कर इसे करना पड़ा खत्म,
ऐसे ही मुफ्त में ना मिली थी यह आजादी,
बड़ी मुसीबतों के बाद यह मिली है आजादी,
मान से, जतन से संभालो,यह आजादी।
आजाद हो तुम तो नहीं जानते हो क्या होती आजादी,
आजादी के मायने ना बदलो ओ मेरे साथी।

अनुपम वरदान

अनचाही सी चाह है बेटी,
कोई ना चाहे उसके घर हो बेटी,
कुदरत का इसे करिश्मा कहिए,
जो ना चाहे उसके घर ही हो बेटी ।

भाग्य को अपने वह समझता है खोटा,
तभी तो उसके घर हुआ ना कोई बेटा,
बेटा बेटी में फर्क तो सदियों से है होता,
ये भी सत्य है कि बेटी से होता है बेटा।

जिन बेटों को कहते नहीं थकता तू अपना,
बीवी के आगे ना समझते किसी को अपना,
बेटी जो ना होती किसी के आँख का सपना,
वही बना लेती हर किसी को अपना।

बेटी के जन्म से तुम्हारा सिर जो झुकेगा,
सोचो जरा जो पेड़ फलेगा वही तो झुकेगा,
बेटा वाला चाहता है तुमसे कन्यादान,
फिर भला वह कैसे बनेगा तुमसे महान।

बेटा है अगर कृष्ण तो राधा है बेटियाँ,
चाँद है अगर बेटा तो चाँदनी है बेटियाँ,
बेटा हो या बेटी सृष्टि के लिए ये जरूरी,
क्योंकि ये प्रभु के अनुपम वरदान हैं।

बदलाव

कहाँ पहले के लोग...नजर बचाकर ...
कुछ ऐसे वैसे काम करते थे...
पर अब न वो शरम बची ...न वो समय...
सब कुछ खुलेआम हो रहा...
अब दिन पलट गये...
कभी ...वो नजर बचाते थे...
अब हम नजर बचाते हैं,
देखकर भी अनदेखा कर देते हैं,
हमने भी अब नजरिया बदल लिया,
जो घटिया था उसे अब बढ़िया कह दिया,
कहें भी क्यों नहीं..
यही बदलाव तो आया है...
भैया,ये नया समय आया है,
पिज्जा बर्गर के भाव बढ़ गये,
रोटी के भाव गिर गये,
माँ बाँप के दिन फिर गये,
वृद्धाश्रम के वो हो गये,
वसंत को छोड़ हम वेलेंटाइन के हो गये,
क्या क्या कहें कि,
अब हम लोग सात जन्मों के नाते को छोड़,
लिव इन रिलेशनशिप के हो गये।
मानव बनकर भी.. पशु सा व्यवहार सीख गये...
अपनी मर्यादाओ को खुद तोड़ रहे,
क्या कहे ...हम कितना बदल रहे और क्यों बदल रहे...?

विकार

विकारों..हा हा...
मैं विकारों की बात करूँगी
वो भी तो कई हैं...
किसी को खाने का...
तो किसी को....
बात ना पचाने का...
और कुछ समाजिक विकार...
क्या करें...
ये विकार जहाँ भी होते हैं...
सब उलट पलट देते हैं...
काश ...
इनकी कोई ऐसी दवा होती...
कि ये दुबारा ना होते...
तो हाय...
समाज कितना सुन्दर होता..
इन विकारों के लिए..
वैसे कहीं ना कहीं..
हम ही तो ..
जिम्मेदार हैं...
क्यों ना हम ..
इन विकारों से छुटकारा पाएँ ...
कैसे...
तो वो कहते हैं ना...
मन के हारे हार..
और मन के जीते जीत...
बस तो जिसने मन पर विजय पा ली...
उसके सारे विकार स्वतः नष्ट हो गए।

किनारा

कौन ...
कब.....
किससे किनारा कर ले...
वो तो राम जी ही जाने...
या वो.....
वैसे ये बात सत्य सी प्रतीत होती है...
पर सच तो आप जानते ही होंगे...
हाँ वही....
हाँ ..हाँ हाँ आप ठीक समझे..
मतलब निकलने के बाद...
कौन किसको पहचानता है...
आज के इस स्वार्थी संसार में...
जहां बाँप बेटा से..भाई ..भाई से
काम सटते ही..किनारा कर लेता है
सच...कैसा ये समय आया है..
जिनके सहारे से
ज़िन्दगी किनारे लगती थी ...
आज उनसे....उनके अपने ही....
किनारा कर लेते है...

अफसोस है

इस युग में...
बरसाती कुकरमुत्ते की तरह
तथा कथित साधुओं का
जन्म होता है...
हर गली ...हर गाँव.. हर शहर में ...।
कुकरमुत्ता तो बरसात के बाद
स्वयं ही मर जाता है..
पर ...
अफसोस है ऐसे साधू...
बेशरम की डाल की तरह
फलते फूलते रहते हैं..
समाज इन्हें ...
क्यों..नहीं पहचानता ?
क्यों नहीं नकारता.?
बरसाती बाढ़ में ..
क्यों नहीं...
विसर्जित कर देता...?
अफसोस है।

बेघर की बरसात

बरखा का मौसम,
यूँ तो बड़ा प्यारा होता है,
पर..कभी सोचा है..
बेघर युवती के लिये,
ये मौसम कितना..
विपदा भरा होता है !
वह सोचती है..
कि बरसात..
शायद यह जताने आई है,
कि वह बेघर है,
घने पेड़ के नीचे या,
किसी अट्टालिका की ओट में,
बरसाती धार से.
क्या....बचा पायेगी अपनी काया..?
लोगों की चुभती नजरों से,
सिमटती बेघर की काया,
उसे ना भाई कभी बरसात,
उसे ना हुआ प्यार कभी, बरखा बहार से।

देश प्रेम

देश प्रेम की ना सिर्फ़ बात होना चाहिए।
इसके लिये कुछ प्रयास करना चाहिए,
जंगे मैदान के आलावा भी होते कई काम हैं,
जो समाज मे रहकर भी कर सकते वो काम हैं
देश के लिये जीना भी बड़ा काम है।
देश प्रेम से मिलता जिंदगी को मुकाम है,
ये देश मेरा है कहने से ना काम चलेगा,
अपनों के जैसा इसका भी, जरा ध्यान रखना पड़ेगा।
भारत माँ की कसम खाकर ये, सबको कहना पड़ेगा,
हाथ पे हाथ धर के बैठने से ना सबका काम चलेगा,
धर्म के नाम पर अब किसी को ना ठगने देंगे,
भ्रष्टाचारियों का मुख अब काला करेंगे।
दुनिया के आगे अपना सिर झुकने ना देंगे,
इतना प्यारा है ये वतन कि
प्रभु भी अवतार लेने,
भारत भूमि को ही चुनते हैं।
राम,कृष्ण,धुव्र,प्रहलाद भी
पुण्य धरा पर कभी रहे हैं,
हिंन्दु मुस्लिम सिख ईसाई, आपस में है भाई भाई,
एक वतन है एक है माता,हम सब की जान है,
ये भारत माता ही हम सब की पहचान है।

अबला नहीं मैं आग हूँ

अबला नहीं मै आग हूँ,
कुदरत की हँसीं सौगात हूँ,
सुलगती,दबी चिंनगारी हूँ,
चिंनगारी बनेगी जब अंगारा
क्या होगा तुम्हारा....
मै नारी हूँ, प्रतिकार जानती हूँ,
अपने हक के लिऐ लड़ना जानती हूँ,
साहस की होली में.....
समाज की कुरीतियों को जलाती हूँ,
जिजीवषा मेरे हृदय में...
सृष्टि के निर्माण की...
मै ही सृजनहार हूँ।
नारी शक्ति को कोई झुका दे,
जमाने में ये दम नहीं,
यही बात मैं सबको बतलाती हूँ,
नारी ...मोहताज नहीं..
किसी नाम की।
वह अपनी पहचान...
स्वयं बना सकती है।
चाहे वो तो...आसमाँ
को भी झुका सकती है..

चिंता

चोर सी चिंता...जी में घुसती है।
बाहर निकालो...लेकिन
वो अंदर ही धँसती है।
दीमक सी वो...मन में लगती है।
मकड़ी के जाल सा..धागा बुनती है।
मन ही मन में...मायाजाल सा रचती है
जन के जीवन को...शराबी जैसा डूबाऐ रखती है।
खुफिया पुलिस सी वो....पैरवी करती है।
तिल का ताड़ बनाती रहती है।
बिना बात के ही वो....बाल की खाल निकालती रहती है।
पका पकाकर वो उसे..ज्वालामुखी सा बनाती है।
ज्वाला की लपटो में...सबको बहाती रहती है।
हँसते हुये को ये रोना सिखलाती रहती है।
चिंता ये...चिता तक ले जाती है।
इसलिये...
इससे निकलने की एक ही राह।
चिंतन कर..ना हो उदास

अबला नहीं है नारी

बाजारवाद का मुहरा बन
सरेआम बिक जाती है,
अपरिमित ऊर्जा शक्ति को
बिखराकर गुम हो जाती है...
याद करो...
तृण के तिनके से
जिसने...
दशानन को परास्त किया
अपने शौर्य पराक्रम से...
लक्ष्मी बाई ने...
फिंरगियो को हताश किया।
स्नेह के घट से सींच..
जो घर की बगिया महकाये
वहीं कोमलांगी..
दुष्टों पर नारायणी ...
बन जाती है,
तुम भी हो इनकी संतान,
संस्कृति को बनाओ महान्
अबला कैसे हो सकती है..
भारत माँ की संतान...
भारत माँ की ये शान।

बेरुखी

कभी तो पुकारो..
जरा अपने पन से बाबा,
कि ये कान तरस गये हैं,
बिटिया शब्द सुनने को।
मैं रहना चाहती हूँ बाबा,
तुम्हारे आस पास,
जिससे मैं पा सकूँ तुम्हारा एहसास ...
हर क्षण जलती बुझती है,
मेरे मन में ज्वालाएँ
कि क्यों नहीं बाबा मुझ पर प्यार जताये।
कहता रहता दिल बेचारा
बढ़ने तो समय की धारा,
देखना आएगा कल तुम्हारा,
आँखे खुली या बँद रहे,
बस देखूँ मैं एक ही सपना,
कि बाबा कि मिट गई बेरूखी,
जैसे वो कह रहे मैं तो तेरा अपना,
बाबा तुझसे ही साँझ सबेरा,
कह दो बाबा कि मैं हूँ तेरा,
नजरे जैसे घाव पर..
मरहम सी करती बाबा
लेकिन तुम्हारी चुप्पी..
फिर मेरे घाव कुरेदती
और मुझे याद कराती तुम्हारी बेरूखी.....!!

राम चले आएँगे

राम चले आएँगे सुन लो ...
राम चले आएँगे..
वो तेरे घर भी आएँगे..
मेरे घर भी आएँगे...
राम चले आयेगे ...सुन लो

पाप की, पुण्य की,गठरी तज हम,
प्रेम से बाट निहारेंगे तो...
शबरी के जैसे ही प्रभू जी
हमरे घर भी आएँगे...
तेरे घर भी आएँगे..
राम चले .....

धन अभिमान को तजके जब हम,
प्रभु की शरण में जाएँगे तो
केवट के जैसे ही हम भी
प्रभु के चरण पखारेंगे ...
हम भी चरण पखारेंगे..
राम चले...

बचपन

वो पानी में छप -छप करना,
जिद करके भीग जाना,
दाँतो का कटकटा कर बताना,
गीले कपड़े में ही माँ की गोद में लेट जाना,
धीरे से माँ को चूम उसे फुसलना,
और माँ द्वारा सिर का सहलाना,
बड़ा याद आता है, तुम लौट आओ ओ बचपन।

माँ की चोरी से बाहर जाना,
फिर दोपहर भर खेलना,
पतंग के पीछे -पीछे भागना,
काकी के घर से आम तोड़ना,
फिर उनसे पिटकर,
उनके ही हाथ से लड्डू खाना,
कितना मासूम था ना वो बचपन, तुम,सच लौट आओ ओ बचपन।

स्कूल की मैडमों की नकल उतारना,
घर पे दादी की छड़ी छुपाना,
दोस्तों से कच्ची पक्की दोस्ती करना,
अपने को बड़ा होशियार समझना,
पिता जी की डाँट सबके सामने पड़ना,
संतरे की गोली पाकर सारी बात भूल जाना,
कितना प्यारा था ना वो बचपन, ओ बचपन तुम लौट आओ।

नशा

बिन नशे के जग में
कोई नहीं है यारों,
कोई नहीं है यारों,
कोई नहीं है प्यारों।

किसान को तुम देखो,
किसानी का नशा है,
मिलती ना उसको रोटी,
फिर भी तो वो फँसा है,
अन्नदाता आज अन्न को
तरस रहा है यारों,
बिन नशे....

प्रभु भक्ति करके देखो,
भक्तों का ये नशा है,
छूट जाएगा जग सारा,
इसमें तू जो फंसा है,
उतरेगी ना ये मस्ती,
तुम रटो प्यारों,
ये प्रेम का नशा है,
इसको छको तुम प्यारो.
बिन नशे.....

सखी

दो अलहड़ सी सहेलियाँ
जब मिलती है...
तो पूछो मत बस झूम के झूमती है
बेफिक्री से वो भूल जाती सारे जमाने को...
बस याद रखती ...
अपनी सारी पुरानी बातो को...
बेबाक होकर...
हँसती ...मुस्कुराती..
और फिर जी भर के खिलखिलाती...
हो बाजार या गली...
नहीं सोच करती...
अपनी ही दुनिया में मस्त
गलबहियाँ डाल...
देती ताली पर ताली...
झूमती उनके कानो की बाली...
झूमते कंगना...
उनका तो बस एक ही कहना...
दोस्त मिल जाऐ...तो फिर क्या कहना....
लगता जैसे ...मिल गये..
मुझे सारे...गहना
अब तो सखी..हो ना बिछड़ना...

अंकुरण

सच कहू ....
आज सच कहने ..
का दिल कर रहा है..
अपनी ही कमजोरियों को...
कहने का मन कर रहा है..
जब देखो ...हम
परिस्थितियों का रोना रोते है...
क्या ये ...
सही है....
क्योंकि जो हम चाहे....
वो कब और तब...
नहीं कर पाऐ ..।।
बताओ....
कुछ गलत हो तो...
बात तो सदा....
अंकुरण की थीं...
बीज तो अंदर है...
पर हमने ...
उसे अंकुरित होने ..
ही ना दिया...
किसका कसूर...

क्या झाँसी वाली रानी
की बात करे...
या कल्पना चावला की...
जिसने जो चाहा ...
मुकाम हासिल किया...
जब हम...खुद..
बाजारवाद का मोहरा...
बनना चाहते है ...तो
फिर....।
कौन हमारी रक्षा करेगा...
हम अपनी....मयाZदा ...
खुद लांघ रहे...
इसका कौन जबाबदार...
अब स्वयं...
अपनी जबाबदारी लेनी होगी...
आपको क्या बनना....
असल कहना होगा...
सही समय पर...
बीज का अंकुरण होने
देना होगा...

माँ तुझे प्रणाम

वृद्धाआश्रम में रहकर भी
माँ संतान सप्तमी रहती है
हो जाये ना बच्चे का अनिष्ट
यही सोच प्रभु को भजती है

दुनिया का उसे कोई मोह नहीं
पर उससे वो मोह करती है
आशा का दीप जलाकर
देहरी पर बैठा करती है

उसकी गल्तियो पर भी
वो किस्मत को दोष दिया करती है
बेटा तो मेरा बड़ा ही भोला भाला है
कहकर वो हँसा करती है

उसके लिए खुशिया माँग प्रभु से
रोते रोते वो मरती है
अपना सर्वस्व न्यौछावर कर
वह कभी किसी से ना कुछ कहती है

बच्चे की खातिर
खुद को ही भुला देती है
तभी तो ये दुनिया हर बात में
बस माँ माँ कहती है

बेटी

चाँद है अगर बेटा
तो चाँदनी है बेटियाँ
कृष्ण हैअगर बेटा
तो राधा है बेटियाँ

हरे भरे वृक्ष जैसे
मन मोहती बेटियां
त्याग और समर्पण
की खान है बेटियां

गंगाजल सी निर्मल
होती है ये बेटियाँ
गैरो को भी अपना
ये बना लेती बेटियाँ

माँ के घर को छोड़ ये
साँसरे जाती बेटियां
दोनों कुलो की लाज को
बचाती है ये बेटियाँ

माँ

माँ पुकार है,
माँ उपकार है,
माँ ना हो तो,
कौन करे बच्चे को दुलार है।

माँ लोरी है,
माँ गौरी है,
माँ ना हो तो,
कौन बाँधे रिश्तों की डोरी है।

माँ सबला है,
माँ धबला है,
माँ ना हो तो,
कौन रोके बच्चे की बला है।

माँ शक्ति है,
माँ विरक्ति है,
माँ ना हो तो,
कौन सिखाए क्या भक्ति है।

माँ जल है,
माँ बल है,
माँ ना हो तो,
कौन बता जीवन छल है।

माँ आज है,
माँ ताज है,
माँ ना हो तो,
कौन करे बच्चे पे नाज है।

माँ रतन है,
माँ वतन है,
माँ ना हो तो,
कौन करे बच्चे के लिए जतन है।

माँ गीत है,
माँ जीत है,
माँ ना हो तो,
कौन सिखाए जीवन की रीत है।

माँ प्यास है,
माँ आस है,
माँ ना हो तो,
कौन बताऐ तेरा कौन खास है।

माँ रोटी है,
माँ बेटी है,
माँ ना हो तो,
जग वालों ये सृष्टि कैसे होती।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - मनोरमा संजय रतले

जन्म - 17 मार्च 1976, कटनी

शिक्षा - एम.ए. (इकॉनोमिक्स)

मो. - 9981859292

ई मेल - manorama.ratley@gmail.com

विधा - कविता, लघुकथा, लेख, मुक्त गीत

कार्यक्षेत्र - समाज सेवा, हिन्दी लेखिका संघ की आजीवन सदस्य। सरस्वती स्कूल दमोह की प्रबंध समिति सदस्या। महर्षि स्कूल दमोह की समिति सदस्या। राष्ट्र सेविका समिति की नगर बौद्धिक प्रमुख। अखिल भारतीय वैश्य महिला इकाई की जिला महामंत्री। लायनेस क्लब दमोह की बोर्ड मेंबर, स्काऊट गाइड की उपाध्यक्ष, सोनी समाज की नगर अध्यक्ष।

प्रकाशन - लोकजंग (भोपाल), दिनकर सागर, क्रांतिबोल, बुंदेली अरचना, सुरम्या, बंगाली समाज आदि में कविताऐं एवं रचनाओं का प्रकाशन। मातृभाषा में साझा काव्य संग्रह।

सम्मान
1. साहित्यि श्री सम्मान, हिंदी लेखिका संघ दमोह द्वारा।
2. महिमा साहित्य भूषण, महिमा प्रकाशन छत्तीसगढ़ द्वारा।
3. प्रेरणा साहित्य रत्न सम्मान, प्रेरणा संस्था छत्तीसगढ़ द्वारा।
4. शब्द शक्ति सम्मान, राष्ट्रीय कवि संगम भोपाल द्वारा।
5. आयरन लेडी ऑफ दमोह से सम्मानित।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५१,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-95-7

मूल्य- 55/-